निष्काम कर्म का फल

एक चक्रवर्ती राजा था। एक बार उसके राज्य में एक दूर के स्थान पर वर्षा न होने से अकाल पड़ गया। इस बात की सूचना राजा के पास भी पहुँची। राजा ने आदेश दिया की उस क्षेत्र में एक नहर खुदवा दी जाये जिससे भविष्य में अकाल पड़ने का भय न रहे।

नहर खुदनी प्रारंभ हुई। कार्य की प्रगति की सूचना प्रतिदिन राजा के पास पहुंचाई जाती थी। कार्य ठीक-ठाक चल रहा था। बस एक बात ही विचित्र हो रही थी। नहर का काम करने वालों में एक ऐसा मजदूर था जो मेहनत तो प्रतिदिन पूरी करता था, परंतु मजदूरी मिलते समय अनुपस्थित रहता था। दिन निकले, मास निकले, वर्ष निकला; परंतु उसने एक पैसा भी अपनी मेहनत के बदले में न लिया। नहर पूरी बनकर तैयार हो गई, फिर भी वह अपने पैसे लेने न आया। प्रश्न ये था कि उसकी मजदूरी का क्या किया जाये।

राजा ने सोचा कि ऐसे मजदूर के तो दर्शन् करने चाहिये, और वह स्वयं इस समस्या को सुलझाने के बहाने अपनी राजधानी से चलकर उस सुदूर स्थान पर पहुंचा। वहाँ पहुंचकर उसने उस निष्काम मजदूर को बुलवाया और उसके पैसे देने चाहे। मजदूर ने उत्तर दिया "मैं पैसे नहीं लेना चाहता। आपने अपने खजाने से इतना खर्चा करके नहर खुदवाई है, इसलिये मैंने भी अपने शरीर से थोड़ी-सी सेवा कर दी। आप ये पैसे इन मजदूरों में ही बंटवा दीजिये। मैं तो रात को अन्यत्र मेहनत करके अपना पेट भर लेता हूँ।"

महदूर के इस उत्तर से राजा पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। राजा ने मन में सोचा "ऐसा निष्काम! ऐसा धर्मात्मा! ऐसा व्यक्ति तो मेरा मंत्री बनने योग्य है"। राजा उस मजदूर को अपनी राजधानी ले गया। उसे राजा ने मंत्री बना दिया। वह मज्दूर मंत्री का कार्य करने लगा। इस पद का वेतन एक लाख रुपये वार्षिक था, परंतु वह बहुत थोड़े ही रुपये अपने खर्च के लिये लेता था। उसके वेतन का शेष सारा रुपया राजकोष में ही जमा होता था।

राजा के पास पुनः सूचना आई की लाख रुपये से कुछ कम इस धन का क्या किया जाये। राजा तो इस मंत्री को पाकर आश्चर्य चकित था। राजा सोच रहा था कि इतना अच्छा काम और लोभ का नाम नहीं! कितना धार्मिक! कितना सदाचारी! क्यों न मैं इसे ही अपने कार्य पर नियुक्त कर दूँ? इससे प्रजा को अच्छा राजा मिल जायेगा और मुझे भगवान के भजन करने का अवसर मिल जायेगा। राजा ने ऐसा ही किया और वह स्वयं एकांतवास करने लगा।

निष्काम कर्म का कैसा स्पष्ट फल है। रजा स्वयं उस मजदूर से मिलने गया, और अंत में उसे अपना ही पद दे दिया। इसी प्रकार निष्काम कर्म करने वालों से भगवान स्वयं मिलने आते हैं और अंत में उसे अपना ही पद प्रदान कर देते हैं।

बोलो हर-हर महादेव